Result Mitra Daily Magazine

प्रमुख इस्लामिक संगठन

✓ हालिया संदर्भ :

- 21 जुलाई को सुबह तेहरान में हवाई हमले में हमास के प्रमुख नेता इस्माइल हनीया की हत्या कर दी गई।
- वैसे इजरायल ने हमले की जिम्मेदारी नहीं ली है, लेकिन हमास और ईरान ने इजरायल को हमले को दोषी मानते हुए बुरे परिणाम भुगतने की धमकी दी है।
- विशेषज्ञों का मानना है कि ईरान अपने सहयोगियों के माध्यम से इजरायल के खिलाफ हमलों को बढा सकता है।

✓ प्रतिरोध की धुरी (Axis of resistance) :

- यह ईरान समर्थित समूहों का गठबंधन है।
- हिज्बुल्लाह, हमास, फिलीस्तान इस्लामिक जिहाद (PIJ) और हूती इस गठबंधन के प्रमुख समूहों में शामिल है।

✓ गठबंधन का गठन :

- इस गठबंधन की जडें 1979 की ईरानी क्रांति से जुडी है।
- ईरानी क्रांति के फलस्वरूप ईरान में कट्टरपंथी शिया मुस्लिम मौलवियों ने सत्ता पर कब्जा जमाया था।
- भू-राजनीतिक हानि से इस क्षेत्र में USA एवं सुन्नी- बहुल राष्ट्र सऊदी अरब के सहयोगियों का वर्चस्व है।
- ऐसे में ईरानी क्रांति के बाद शिया समर्थकों ने क्षेत्र में अपने प्रभुत्व को विस्तार देने के लिए Non-Stak Actors (विभिन्न उग्रवादी समूहों) को समर्थन देना प्रारंभ किया।
- इस गठबंधन के उदय का एक अन्य प्रमुख कारण इजरायल एवं USA का राजनीतिक गठबंधन भी है।
- दरअसल 1948 में इजरायल के निर्माण के समय से ईरान इसे USA द्वारा क्षेत्र में रणनीतिक वर्चस्व बढाने के हथियार के रूप में देख रहा है।
- कहा जाता है कि गठबंधन का नाम "Axis of Resistance" USA के पूर्व राष्ट्रपति द्वारा 2002 में अपने स्टेट ऑफ यूनियन संबोधन में प्रयोग किए गए "बुराई की धुरी"(Axis of evil) से प्रेरित है।
- जॉर्ज डब्ल्यू बुश ने "Axis of evil" में ईरान, इराक और उत्तर कोरिया को रखा था।

✓ हिज्बुल्लाह :

- शाब्दिक अर्थ 'अल्लाह/ईश्वर की पार्टी'
- 1980 के दशक की शुरूआत में स्थापित एक शिया उग्रवादी संगठन,
- इसकी स्थापना वास्तविक रूप में लेबनान में 1982 में हुए सिविल वॉर के दौरान हुई थी।
- इसकी स्थापना ईरान के 1500 रिवोल्यूशनरी गार्ड द्वारा की गई थी।
- स्थापना का मुख्य मकसद तात्कालिक समय में इजरायल के विरूद्ध लडना था।
- लेबनानी गृहयुद्ध के दौरान हिज्बुल्लाह ने अपने घोषणापत्र में लेबनान से अमेरिकियों, फ्रांसिसियों एवं उनके सहयोगियों को सदा के लिए निष्कासित करना मुख्य लक्ष्य बताया गया था।
- हित्बुल्लाह इस गठबंधन का सबसे बडा और सबसे शक्तिशाली समूह है।
- कथित रूप से हिज्बुल्लाह के पास अत्याधुनिक हथियारों से लैस शस्त्राधार है तथा वर्तमान में लडाकों की संख्या 30,000 से 45,000 है।
- 1985-2000 के बीच हिज्बुल्लाह इजरायल से कई बार जंग लड चुकी है।
- 2000 में हिज्बुल्लाह लेबनान युद्ध में भी इजरायल के विरूद्ध लडा।
- 1990 के दशक में बोस्नियाई युद्ध के दौरान भी हिज्बुल्लाह ने बोस्नि एवं हर्जेगोबिना गणराज्य की तरफ से लडने के लिए लडाकों को संगठित किया था।
- हिज्बुल्लाह लेबनान की एक राजनीतिक पार्टी भी है।
- यूरोपीय संघ के साथ-साथ अन्य कई देशों ने इसे आतंकवादी संगठन माना है।
- इसे ईरान के साथ-साथ सीरिया का भी समर्थन प्राप्त है।
- इस संगठन को सैन्य प्रशिक्षण, हथियार आपूर्ति एवं वित्तीय मदद मुख्यतः ईरान द्वारा की जाती हैं
- 7 अक्टूबर के बाद से इजरायल-हमास युद्ध में लेबनान पूर्णतः सक्रिय है।

✓ हमास :

- फिलीस्तान का एक राजनीतिक-सैन्य समूह है, जिसकी स्थापना 1987 में हुई थी।
- इसकी स्थापना भी मुख्यतः इजरायल के बढते वर्चस्व एवं क्षेत्र में कथित तौर पर अवैध कब्जे को खत्म करने के उद्देश्य से हुआ था।
- इसका गठन मिस्त्र के मुस्लिम ब्रदरहुड की एक शाखा के रूप में हिंसक जिहाद के द्वारा अपने एजेंडो को पूरा करने के लिए किया गया था।
- यह सुन्नी मुसलमानों की सशस्त्र संस्था है, जिसका अंतिम उद्देश्य फिलीस्तीनी क्षेत्र में इजरायल के शासन के बजाय इस्लामिक सत्ता स्थापित करना है।
- यह संगठन गाजा पट्टी क्षेत्र में सर्वाधिक शक्तिशाली है, क्यांकि यह मिस्त्र के सीमा-पास स्थित है, जो उसे सैन्य, वित्तीय, प्रशिक्षण आदि प्रदान करता है। इसके अलावा ईरान भी इसे समर्थन देता है।

Result Mitra

- हमास फिलीस्तीन-इजराय संघर्ष के खात्मे के लिए अन्य किसी भी विकल्प का पूर्ण विरोधी है।
- UN ने 1997 में इसे आतंकवादी संगठन घोषित कर दिया था, साथ ही यूरोप के अधिकाधिक देशों ने इसे आतंकवादी संगठन घोषित कर दिया है।
- हमास Zionism (जायोनीवाद) का कट्टर विरोधी है।

✓ **जायोनीवाद :**

- यह 19वीं सदी से संबंधित एक विचारधारा है, जिसे यहूदीवाद भी कहा जाता है।
- यह विचारधारा यहूदियों के लिए जातीय मातृभूमि का समर्थन करता है।
- इसका मुख्य उद्देश्य फिलीस्तान क्षेत्र में यहूदीकरण का विस्तार करना है।
- जिस दौर में यह विचारधार प्रचलित हुई, उस दौर में फिलीस्तीन उस्मानी साम्राज्य के अधीन था।
- थियोडोर हर्जल को यहूदीकरण (जायोनीवाद) का जनक माना जाता है।

✓ **PIJ :**

- यह एक सुन्नी इस्लामवादी आतंकवादी समूह है।
- इसका उद्देश्य फिलीस्तीन में इस्लामी राज्य स्थापित करना हे।
- USA के अनुसार, यह गाजा-पट्टी क्षेत्र में हमास के बाद दूसरा सबसे बडा आतंकी संगठन है।
- इसकी स्थापना भी मिस्त्र में मुस्लिम ब्रदरहुड की एक शाखा के रूप में की गई थी।

Result Mitra

✓ **हूती :**

- इसकी स्थापना की जडे हूती आंदोलन से जुडी हुई है।
- आंदोलन का नेतृत्व हुसैन-अल-हूती एवं बद-उल-दीन-हूती के द्वारा 1990 के दशक में किया गया था, जो वास्तव में जायदी पुनरूत्थानवादी आंदोलन था।
- यमन सरकार ने हूती विद्रोहियों के प्रति कठोर दमनात्मक कार्यवाही की, लेकिन 2010 तक सरकारी सैनिकों की मदद से हूती विद्रोहियों ने यमन के सादा शहर पर कब्जा कर लिया।
- वर्ष 2014 से हूतियों का नियंत्रण यमन की राजधानी सना के साथ-साथ अन्य प्रमुख शहरों पर भी है।

✓ **जायदी :**

- शिया मुस्लिमों की सबसे पुरानी शाखा,

- जायद बिबन अली ने 8वीं शताब्दी में उम्मायद खलीफा के खिलाफ विद्रोह किया, लेकिन दमन के दौरान उनकी मौत हो गई।
- इसी शहादत के बाद जायदी संप्रदाय का उद्भव हुआ।
- इस्लामी धर्मशास्त्र एवं व्यवहारिक रूप से जायदी शिया के ही भाग माने जाते हैं, लेकिन वे 'ट्वेल्वर' शियाओं से अलग हैं, जो मुख्यतः इराक, ईरान एवं लेबनान में निवास करते हैं।

✓ ईरानी क्रांति :

- क्रांति से पूर्व ईरान में पश्चिमी सभ्यता का वर्चस्व था।
- ईरान पूर्णतः इस्लामिक प्रतिबंधों में अनिवार्य रीति-रिवाजों के पालन को भी छोड चुका था।
- रहन-सहन, खान-पान, पहनावा से लेकर धार्मिक प्रतिबंधों का तात्कालिक ईरान में नामो-निशान नहीं था।
- तात्कालीन समय में ईरान सभी मुस्लिम देशों में सबसे आधुनिक माना जाता था एवं ईरान के कई शहर लंदन जैसे विकसित थे।
- अमेरिका तथा ब्रिटेन की खुफिया एजेंसियों ने विभिन्न तख्तापलटों की मदद से ऐसे लोगों को सत्तासीन रखा, जो पश्चिमी विचारधारा के समर्थक थे।
- ईरान में 1980 के दशक में मोहम्मद रजा पहलवी द्वारा 'व्हाइट रिवोल्यूशन' चलाया गया, जो वस्तुतः ईरान के आर्थिक-सामाजिक स्थिति को पश्चिमी संस्कृतियों से समावेशित कर रहे थे।
- कट्टर इस्लामी नेता और बाद में ईरानी क्रांति के प्रणेता बने अयातुल्लाह खोमैनी ने शाह के व्हाइट रिवोल्यूशन का यह कहकर विरोध किया कि यह इस्लाम-विरोधी है।
- खौमेनी ने 1962 में रजा पहलवी के विरूद्ध जिहाद शुरू किया, जिसके कारण ईरान में रजा के खिलाफ बगावत शुरू हो गया।
- भारी विरोध के कारण शाह को 1964 में ईरान छोडना पडा एवं वे 1975 तक ईरान से बाहर फ्रांस एवं इराक में रहे।
- इस्लामी नेता अयातुल्लाह खौमेनी भी इन दिनों निर्वासित जीवन जी रहे थ।
- 1978 आते-आते शाह पहलवी के खिलाफ बगावत तीव्र होने लगा एवं 1979 आते-आते ईरान में गृह युद्ध की स्थिति उत्पन्न हो गई।
- अप्रैल 1979 में ईरान में जनमत संग्रह करवाया गया, जिसके बाद इस्लामिक रिपब्लिकन ऑफ ईरान के रूप में नई सरकार का गठन हुआ।

✓ अयातुल्लाह खुमैनी :

- क्रांति के बाद से जीवन भर ईरान के सर्वोच्च नेता बने रहे।
- वे इस्लामी कानून के विशेषज्ञ थे तथा उन्होंने इस पर 40 से ज्यादा पुस्तकें लिखी।

Result Mitra TM

- शाह के विरोध के कारण वे 15 वर्ष तक ईरान से निर्वासित रहे।
- उन्होंने "विलायत-ए-फकीह" (इस्लामी न्याय विज्ञान) के सिद्धांत को विस्तारित रूप दिया।
- वे टाइम मैगजीन पत्रिका (USA) द्वारा 1979 में "Person of the Year" चुने गए।
- अयातुल्लाह खोमैनी ने अपने जीवनकाल में ही अयातुल्लाह अली खुमैनी को अपना उत्तराधिकार घोषित कर दिया, जो अभी भी ईरान के सर्वोच्च इस्लामिक नेता है।

✓ मुस्लिम ब्रदरहुड :

- यह मिस्त्र का सबसे पुराना और सबसे बडा इस्लामी संगठन है, जिसे "इख्वान-अल-मुस्लमीन" के नाम से भी जाना जाता है।
- हसन-अल-बन्ना ने इसे 1928 में स्थापित किया था।
- इसके स्थापना का उद्देश्य देश के शासन में शरिया को बढावा देना है।
- मुस्लिम ब्रदरहुड ने कई इस्लामी आंदोलनों को प्रभावित किया और मध्य-पूर्व के कई देश इसके सदस्य है।
- मुस्लिम ब्रदरहुड ने मिस्त्र के पूर्व राष्ट्रपति होस्नी मुबारक को 2011 में बेदखल करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।
- यह संस्था वर्तमान में मिस्त्र में कानूनी रूप से अवैध है।

Result Mitra